"चढ़ावा - EXCUSE"

24. "मन बेचे "सतगुर" के पास तिस सेवक के कारज रास।"

(सत+गुर) = "केवल रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष" जो तुझे केवल अपने निज के दुर्लभ आवश्यक शरीर विशेष में ही प्रत्यक्ष अनुभव विशेष होगी प्रत्येक काल स्थिति विशेष में भी ....! "बाहर" और कहीं भी किन्ही भी यन्नों-उपायों से भी प्रत्येक काल विशेष में भी केवल और केवल "नहीं विशेष"...! "सत" केवल वहीं लगाया जाता है जो तीनों कालों में प्रत्यक्ष

अनुभव विशेष होता हैं तथा गुरू का रूहानी भाव केवल मार्गदर्शक नहीं बल्कि आधारभूतिक आवश्यक सत्ता विशेष है जो हर पल परम चेतन निरन्तर धड़कती विशेष है ....! यह परम चेतन सत्ता विशेष स्वंय तो मूक ही बनी रहती हैं लेकिन "विधि विशेष" के रूप में प्रत्येक जर्रे विशेष में समायी हुई उस पर निरन्तर नज़र विशेष रखती हुई घोर नियंत्रित विशेष करती है आधारभूतिक नियम बन्धन के आधीन प्रत्येक काल में निरन्तर वैधानिक तौर पर .....! समाज का निर्माण अथवा पोषण तभी प्रत्येक आत्मा के लिये लाभकारी सिद्ध होगा जब "पवित्र कमाई" से इस में आधारभूतिक योगदान विशेष हो । झूठ-छल-रेप इत्यादि से उपजित साधनों विशेषो से किया गया सभी प्रकार का चैरिटी रूपी प्रयास "सत" का अनुभव विशेष तो एक तरफ रहा आत्मा को संसार से भी बेदखल करने का ही केवल साधन विशेष साबित होगा फिर नर्क के घोर यातना भरे अन्धकारो से उस का कब छुटकारा होगा इस भयानक सृष्टि चक्र विशाल को तो कोई भी ब्यान करने में भी असमर्थ ही साबित होगा । सभी किसी न किसी प्रकार कहीं न कहीं पूरे सृष्टि चक्र का किन्ही ढंगों विशेषो से केवल जायज़-नाजायज़ ब्लातकार विशेष करने में ही घोर व्यस्त विशेष हैं निरन्तर घोर उत्साहित विशेष-विशेष होते हुऐ ....! अत: ! इन के द्वारा उपलब्ध साधनों विशेषो से चैरिटी केवल आत्मा का घोर पतन विशेष ही साबित होगा दीर्घकाल विशेष में वैधानिक

तौर पर इसे स्पष्ट पहचान लो ....! इस चढ़ावे को स्वीकार करने वाला घर बैठे ही अपने आप रेपिस्ट हो जायेगा वैधानिक तौर पर फिर अपनी रसोई अलग करने से वो कैसे बच सकेगा ....? बाहर दलदल विशेष बना रहा है आत्मा के डूबने हेतू और अन्दर निजी तलाब विशेष में अमृत स्नान कर रहा है अर्थात विधि के माथे पर पूसिया लिखा हुआ है जो केवल इस महान दलाल को ही दिखाई दिया है .....! और बिना चढ़ावा स्वीकार किये इन का महान पन्थ-धर्म-डेरा -सचखंड रूपी पैरिस वगैरह-वगैरह चलना तो दूर रहा कागज़ पर भी नहीं लिखा जा सकता ....! जिन महानताओं का प्रचार विशेष किया जाता है उन्होंने तो जीते जी मत्था नहीं टिकवाया कुछ भी स्वीकार नहीं किया लेकिन उन के आँख बन्द करते ही उन की ठीक अगली पीढ़ी केवल मत्थे ही नहीं टिकवाती बल्कि टोकरा-गोलक ले कर बैठती हैं सब कुछ स्वीकार करती हैं और अपने रूप दर्शनों में केवल मुक्ति ही नहीं बांटती बल्कि अपनी महान दृष्टि विशेष से आप के सभी रेपों विशेष-विशेष महानो को भी विलुप्त रूपी हवा विशेष करने का विशेष-विशेष दावा प्रस्तुत करती हैं ....! तो क्या सच में विधि का विधान "काला" हो गया है वैधानिक तौर पर ....? स्वंय विचारियेगा अवश्य ....! जानकारी के लिये इतना अवश्य जान ली जियेगा कि जो सुख-साधन रेप के बदले उपलब्ध विशेष हो रहें हैं वो केवल पिछले आप के ही कमाये हुऐ दुर्लभ आवश्यक सत्यो विशेषो को ही जलाने से प्रत्यक्ष

हो रहे हैं न कि आप के प्रत्यक्ष रेपों के ऐवज़ में .....! इन का नतीजा तो केवल आप के निजी खातों में जमा विशेष हो रहा है जिन्हे आगे आपको विद इटरेस्ट भुगतने के लिये मजबूर होना ही पड़ेगा अनन्त कल्पो विशेषो के बाद भी वैधानिक तौर पर सभी महान-महान सम्बन्धों-जानकारों-सेवादारों-अनुयायीयों विशेषो को भी अपने-अपने योगदानो के अनुसार .....! फिर भी अगर आपको इन महान-महान दलालों पर भरोसा हैं तो लगे रहो आप इस "मृग-मरीचिका" रूपी धन्धों विशेषो में और इन्तज़ार करो प्रत्यक्ष के आँख मूंदनें का सभी सच एक पल में प्रत्यक्ष हो जायेगा ....! अरे ये क्या ! आप के बाल तो किसी और के विकराल हाथों में हैं और वो बड़े ही गन्दे ढ़ंग से घसीट कर ले जा रहा है .....! कर्म-काण्ड धर्म-पाखण्ड जो बीजे-तिन जम-जगाती लूटै .....! "हक पराया नानका उस सुअर उस गाय ।। गुरु पीर हामा ता भरे जा मुरदार न खाई ।।" "मारण पाहि हराम मह होई हलाल न जाई ।। गली भिसति न जाइए छूटै सच कमाई ।।" अर्थात पराये अधिकार में आप का जबरदस्ती दखल विशेष सभी मत-धर्म के अनुयाइयों के लिये घोर धर्म अथवा विधि विधान के विरुद्ध है यानी के आत्मा के लिये हराम अर्थात नर्क विशेष-विशेष ही हैं । विशेष महान-महान मार्ग दर्शक भी तभी उन्ही आत्माओं को केवल स्वीकार विशेष करते हैं जो घोर मर्यादित विशेष रहती हैं प्रत्येक काल - स्थिती विशेष में भी पराये मुर्दे नहीं खाती अर्थात

मरना पसन्द करती हैं अमर्यादित होना नहीं यानी के विधि के विधान में ही केवल अनुकूल विचरती हैं न कि विपरीत .....! और फिर पराये मुर्दे हज़म विशेष कर कुछ हिस्सा दान-दक्षिणा-चैरिटी कर देने के बाद जो आप के पास शेष बचता है वो भी केवल "हराम" ही होता है न कि चैरिटी के बाद बचा हुआ "हलाल विशेष" हो जाता है....! इन हराम के व्यवहारों से सुख-स्वर्ग की गली अर्थात दसवें मुक्ति के द्वार का अनुभव कभी भी नहीं होता....! इस मार्ग के लिये तो केवल "सच" के व्यवहार रूपी सोच की कमाई विशेष ही आत्मा को सत्य का आवश्यक व्यवहारिक आत्मिक बोध विशेष करवाती है....! और फिर झूठ के व्यवहार रूपी गली में विचरण करने वाली आत्मा को तो अन्त में केवल नर्क की ही अन्धी तड़पाने वाली गलियों विशेषो में ही तड़पने के लिये मज़बूर विशेष होना ही पड़ता है ।

"कूड़ बोल मुड़दार खाई-अवरे नू समझावण जाई ।
मुठा आप - मुहाऐ साथे - नानक ऐसा आगू जापै ।।"

आज सारे जगत की स्थिति बिलकुल ऐसी ही बनी हुई है अर्थात जो निरन्तर मुर्दे विशेष-विशेष खाता हुआ केवल जहर विशेष ही इकठ्ठा करने में घोर व्यस्त विशेष है वही संसार में ज्ञानी-गुरमुख-गुरू-पीर-नेता-अधिकारी विशेष वगैरह-वगैरह बना हुआ गद्धी-तखता विशेष बना कर दूसरों को मार्ग दर्शाता हुआ समझाने

विशेष में लगा हुआ है....! लेकिन सच तो ये है कि वह स्वंय तो ठगा अर्थात डूबा हुआ ही है और जो उस के साथ लगे अथवा अनुयायी बने हुऐ हैं वो भी धीरे-धीरे बड़े प्यार-श्रद्धा से डूबते ही जा रहे हैं केवल अपने ही प्रयत्नों विशेषो से निरन्तर चलते हुऐ ....! और ऐसे महानो को जगत में आगू अर्थात गुरू-प्रधान के रूप में प्रचारित किया जाता है ....! पूरा मीडिया आज चकला अर्थात रंडी विशेष बना हुआ इसी का प्रचार-प्रसार करने में ही घोर व्यस्त विशेष हैं ....! और महान-महान दल्ले इस रंडी को नचाने में निरन्तर प्रयत्नशील विशेष हैं। अधिकारी को वोट दो पर अधिकारी विशेष की परिभाषा किसी के पास नहीं हैं अर्थात सभी अपराध विशेष-विशेष सहित अधिकारी हैं ....! अपने इलाके के प्रतिनिधियों की पत्री कोई भी चैनल प्रचारित नहीं करता । करोड़ों की घूस खा कर उन्हे ही अधिकारी निश्चित खानदानी बताता हुआ "आगू जापै" साबित कर रहा है....! पूरे सिस्टम में ऐसा कौन हैं जो इस परिभाषा पर पूरा नहीं उतरता इस की खोज व्यर्थ का प्रलाप मात्र ही है । "पार्टी" नाम के राक्षस को तोड़ना होगा तथा प्रत्यक्ष सक्षम समर्थ ज्ञानवान को ही नुमाइंदा बना कर पूरे सिस्टम को तोड़ कर छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित कर प्रजा के सीमित छोटे-छोटे दायरों में उस के आधीन प्रत्यक्ष प्रस्तुत कर ही मनुष्य की गती और सुरक्षा सम्भव विशेष है प्रत्यक्ष स्थिति विशेषो में....!

मनुष्यता की सुरक्षा भौतिकवादिता में नहीं बल्कि प्रकृति की वैधानिक अनुकूलता में हैं अर्थात सभी प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा तथा पोषण के केवल आधारभूतिक संसाधनों का ही पूरी तरह से पोज़िटिव संचालन-अर्जन-निरन्तर ही आत्मा को आवश्यक लाभ रूपी पोषण देने में स्मर्थ विशेष है .....!